चैत्रगच्छ का संक्षिप्त इतिहास

डॉ. शिवप्रसाद...

मध्ययुगीन श्वेताम्बर-गच्छों में चैत्रगच्छ भी एक था। चैत्रपुर नामक स्थान से इस गच्छ की उत्पत्ति मानी जाती है[१]। इस गच्छ के कई नाम मिलते हैं,यथा चित्रवालगच्छ, चैत्रवालगच्छ, चित्रपल्लीयगच्छ, चित्रगच्छ आदि। धनेश्वरसूरि इस गच्छ के आदिम आचार्य थे। इनके पट्टधर भुवनचन्द्रसूरि हुए जिनके प्रशिष्य और देवभद्रसूरि के शिष्य जगच्चन्द्रसूरि से वि.सं. १२८५ ई. सन् १२२९ में तपागच्छ का प्रादुर्भाव हुआ।[२] देवभद्रसूरि के अन्य शिष्यों से चैत्रगच्छ की अविच्छिन्न परंपरा जारी रही।

चैत्रगच्छ के इतिहास के अध्ययन के लिए साहित्यिक और अभिलेखीय दोनों प्रकार के साक्ष्य उपलब्ध हैं। साहित्यिक साक्ष्यों के अंतर्गत इस गच्छ से संबद्ध केवल तीन प्रशस्तियाँ मिलती हैं। इस गच्छ की कोई पट्टावली नहीं मिलती, किन्तु तपागच्छीय आचार्यों की प्राचीन कृतियों की प्रशस्तियों एवं इस गच्छ की विभिन्न पट्टावलियों में चैत्रगच्छ के प्रारम्भिक चार आचार्यों का उल्लेख मिलता है । अलबत्ता इस गच्छ के मुनिजनों द्वारा प्रतिष्ठापित अनेक जिनप्रतिमाएँ उपलब्ध हुई इन पर उत्कीर्ण लेखों से ज्ञात होता है कि ये वि.सं. १२६५ /ई. सन् १२०९ से वि.सं. १५९१/ ई. सन् १५३५ के मध्य प्रतिष्ठापित की गई थीं। अभिलेखीय और साहित्यिक साक्ष्यों द्वारा इस गच्छ की विभिन्न शाखाओं जैसे भर्तृपुरीय शाखा, धारणपद्रीय (थारापद्रीय) शाखा, चतुर्दशीपक्ष शाखा, चन्द्रसामीय शाखा, सलषणपुरा शाखा, कम्बोइया और अष्टापद शाखा, शार्दूल शाखा आदि का भी पता चलता है।

अध्ययन की सुविधा के लिए सर्वप्रथम साहित्यिक साक्ष्यों और तत्पश्चात् अभिलेखीय साक्ष्यों का विवरण प्रस्तुत है--

सम्यक्त्वकौमुदी-- चैत्रगच्छीय आचार्य गुणाकरसूरि ने वि.सं. १५०४ / ई. सन् १४४८ में उक्त ग्रंथ की रचना की। इसकी प्रशस्ति[३] में यद्यपि उन्होंने अपनी गुरुपरंपरा के किसी आचार्य का नामोल्लेख नहीं किया है, किन्तु चैत्रगच्छ से संबद्ध सबसे प्राचीन प्रशस्ति होने से यह महत्त्वपूर्ण है।

गुणाकरसूरि की दूसरी कृति है वि.सं. १५२४ ई. सन् १४६८ में रचित भक्तामरस्तवव्याख्या। इसकी प्रशस्ति[४] से ज्ञात होता है कि चैत्रगच्छीय आचार्य धनेश्वरसूरि की मूल परंपरा में गुणाकरसूरि हुए, जिन्होंने उक्त कृति की रचना की। वि.सं. १५५४/ई. सन् १४९८ में लिपिबद्ध की गई **भक्तामरस्तव** व्याख्या की एक प्रति मुनि पुण्यविजय जी के संग्रह में उपलब्ध है, जिसकी दाताप्रशस्ति में चैत्रगच्छीय मुनि चारुचन्द्र का उल्लेख है।

दशवैकालिकसूत्र की वि.सं. १७६८/ई. सन् १७१२ में लिखी गई एक प्रति की दाताप्रशस्ति[५] में चैत्रगच्छ की देवशाखा का उल्लेख है। यह प्रति उक्त शाखा के आचार्य रत्नदेवसूरि के पट्टधर सौभाग्यदेवसूरि की परंपरा के मुनि बेलजी के पठनार्थ लिखी गई थी। चैत्रगच्छ से संबद्ध यही साहित्यिक साक्ष्य प्राप्त होते हैं। जैसा कि पूर्व में कहा गया है तपागच्छ से संबद्ध प्राचीन प्रशस्तियों एवं पट्टावलियों में चैत्रगच्छ के प्राचीन आचार्यों का विवरण प्राप्त होता है।[६] जो इस प्रकार है--

धनेश्वरसूरि
|
भुवनचन्द्रसूरि
|
देवभद्रसूरि
|
जगच्चन्द्रसूरि

(चैत्रगच्छ)

(वि.सं. १२८५ /ई. सन् १२२९ में तपागच्छ के प्रवर्तक)

चैत्रगच्छ से संबद्ध दो लेख चित्तौड़ से प्राप्त हुए हैं। इनमें से एक लेख चैत्रगच्छ की मूलशाखा और दूसरा भर्तृपुरीयशाखा से संबद्ध है। त्रिपुटी महाराज[७] ने प्रथम लेख की वाचना इस प्रकार दी है--

"......... कार्तिक सुदि १४ चैत्रगच्छे रोहणाचल चिंतामणि ....सा मणिभद्र सा. नेमिभ्याम् सह वंडाजितायाः सं. राजन श्रीभवनचन्द्रसूरिशिष्यस्य विद्वत्तया सुहृत्तया च रंजितं श्रीगुर्जरराज श्रीमेदपाटप्रभुप्रभृतिक्षितिपतिमानितस्य श्री (३) x x x लघुपुत्र देदासहितेन स्वपितुरामित्य प्रथमपुत्रस्य वर्मनसिंहस्य पूर्वप्रतिष्ठित

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

-श्रीसीमंधरस्वामी श्रीयुगमंधरस्वामी।"

इस लेख में चैत्रगच्छीय आचार्य भुवनचन्द्रसूरि के शिष्य का उल्लेख है, किन्तु उनका नाम नहीं दिया गया है। साहित्यिक साक्ष्यों में भुवनचन्द्रसूरि के शिष्य देवभद्रसूरि का उल्लेख मिलता है, अतः यह संभावना व्यक्त की जा सकती है कि चित्तौड़ के उक्त लेख में वर्णित भुवनचन्द्रसूरि के शिष्य उक्त देवभद्रसूरि ही हों।

देवभद्रसूरि के शिष्य जगच्चन्द्रसूरि से वि.सं. १२८५ ई. सन् १२२९ में तपागच्छ का प्रादुर्भाव हुआ, अतः देवभद्रसूरि का समय उनसे लगभग ३० वर्ष पूर्व अर्थात् वि.सं. १२५५ के आसपास माना जा सकता है। प्रायः यही समय उक्त लेख का भी हो सकता है। इस आधार पर उक्त लेख में उल्लिखित गुर्जर नरेश को भीम द्वितीय (वि.सं. १२३४-१२७७,ई. सन् ११७८-१२२१) तथा मेदपाट (मेवाड़) के राजा को गुहिलवंशीय शासक सामंतसिंह (वि.सं. १२२८-१२५८, ई. सन् ११७१-१२०२) अथवा उसके उत्तराधिकारी कुमारसिंह[८] से समीकृत किया जा सकता है।

चूँकि चैत्रगच्छ से संबद्ध कोई भी साक्ष्य वि.सं. १२६५/ई. सन् १२०२ के पूर्व का नहीं है, किन्तु अंतर्साक्ष्यों के आधार पर उक्त मितिरहित लेख निश्चय ही वि.सं. १२६५ के पूर्व का सिद्ध होता है, अतः इसे चैत्रगच्छ का सबसे प्राचीन साक्ष्य माना जा सकता है।

चैत्रगच्छ से संबद्ध प्रतिमालेखों का विवरण इस प्रकार है--

क्रमांक	वि.सं.	तिथि/वार	आचार्य का नाम	प्रतिमा लेख /स्तम्भ लेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रंथ
१.	१२६५	तिथिविहीन	पद्मदेवसूरि	पार्श्वनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, (नाहटों में) बीकानेर	अगरचंद नाहटा, संपा., बीकानेर जैन लेख संग्रह, लेखाङ्क १४८०
२.	१२७३	फाल्गुन वदि २ रविवार	धर्मसिंहसूरि	गुरुमूर्ति पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिपार्श्वनाथ जिनालय, सादड़ी(राज.)	अरविन्दकुमारसिंह, "चिन्तामणिपार्श्वनाथ मन्दिर के तीन जैन प्रतिमालेख" पं. दलसुखभाई मालवणिया - अभिनन्दनग्रन्थ, पृष्ठ १७२-७३
३.	१२८८	आषाढ़ सुदि १० शुक्रवार	...सूरि		चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिना; बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त लेखाङ्क. १२६
४.	१३००	माघ वदि २	हरिचन्द्रसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, थराद	दौलतसिंह लोढा सम्पा; श्रीप्रतिमालेखसंग्रह लेखाङ्क......।
५.	१३१२	वैशाख वदि ४	यशोदेवसूरि के पट्टधर देवेन्द्रसूरि	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिंतामणि पार्श्वनाथ जिना., चिंतामणि शेरी, राधनपुर	मुनि विशालविजय राधनपुरप्रतमालेख संग्रह लेखाङ्क. ३६
६.	१३१२	माघ वदि ५ बुधवार	देवेन्द्रसूरि के पट्टधर धर्मदेवसूरि	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १५३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७.	१३२०	फाल्गुन सुदि १२	रविप्रभसूरि	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, (कोचरों में) बीकानेर	वही, लेखाङ्क १६२०
८.	१३२१	चैत्र सुदि ३ शुक्रवार	शालिभद्रसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	अनुपूर्ति लेख, आबू	मुनि जयन्तविजय, संपा.- अर्बुद प्राचीन जैन-लेख-संदोह, लेखाङ्क ५२९
९.	१३२१	फाल्गुन सुदि .....?	आमदेवसूरि	शांतिनाथ की चौबीसी प्रतिमा लेख	बावन जिनालय करेड़ा, मेवाड़	पूरनचन्द नाहर, संपा.- जैन-लेख-संग्रह भाग-२, लेखाङ्क १९२१
१०.	१३२६	चैत्रवदि १२ शुक्रवार	शालिभद्रसूरि के शिष्य धर्मचन्द्रसूरि	"	पार्श्वनाथ देरासर, लाडोल	मुनि बुद्धिसागर, संपा.- जैन-धातु-प्रतिमा-लेख-संग्रह, भाग-१, लेखाङ्क ४६२
११.	१३२६	चैत्रवदि १२ शुक्रवार	शालिभद्रसूरि के शिष्य धर्मचन्द्रसूरि	अजितनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, लाडोल	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखाङ्क ४६३
१२.	१३२६	...वदि ३ बुधवार	पद्मप्रभसूरि	जिन प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १६८
१३.	१३२७	फाल्गुन सुदि१२	अजितसिंहसूरि के संतानीय कनकप्रभसूरि	"	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखाङ्क २२२९
१४.	१३३१	तिथिविहीन	.............-	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १७८
१५.	१३३२(?)	वैशाख सुदि ११ रविवार	देवेन्द्रसूरि के संतानीय धर्मदेवसूरि	चतुर्विंशति पट्ट पर उत्कीर्ण लेख	"	वही. लेखाङ्क १८३
१६.	१३३३	आषाढ़ सुदि २	देवाणंदसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखाङ्क १२९७
१७.	१३३३	माघ सुदि १	देवचन्द्रसूरि के पट्टधर अमरचन्द्रसूरि के शिष्य अजितदेवसूरि	स्तम्भलेख	जैन मंदिर, रत्नपुर, मारवाड़	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-१ लेखाङ्क ९३५
१८.	१३३४	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	भद्रेश्वरसूरि के शिष्य नरचन्द्रसूरि	जिन प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पंचायती मंदिर, जयपुर	विनयसागर, संपा.- प्रतिष्ठालेखसंग्रह, लेखाङ्क ८६
१९.	१३३४	"	देवभद्रसूरि	कायोत्सर्ग	जैनमंदिर	नाहर, पूर्वोक्त,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

		के संतानीय	जिन प्रतिमा पं. सोमचंद्र	तिवरी, सिरोही पर उत्कीर्ण लेख	भाग-२	लेखाङ्क २०९०
२०.	१३३५	चैत्र वदि ५ रविवार	पद्मचंद्रसूरि के पट्टधर शालिभद्रसूरि के शिष्य रविचन्द्रसूरि और धर्मचन्द्रसूरि	शालिभद्रसूरि की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, लाडोल	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखाङ्क ४५६
२१	१३३९	तिथिविहीन	धर्मदेवसूरि	नेमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीर जिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-३, लेखाङ्क २४१६
२२.	१३४०	ज्येष्ठ सुदि १३ रविवार	देवप्रभसूरि के संतानीय अमरभद्रसूरि के पट्टधर अजितदेवसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	सुपार्श्वनाथ का बड़ा पंचायती जैनमंदिर, जयपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ११३४
२३.	११३४....	....५ रविवार	रत्नप्रभसूरि के पट्टधर पद्मप्रभसूरि	पार्श्वनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	नवखंडापार्श्वनाथ जिनालय, भोंयरापाडो, खंभात	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-२ लेखाङ्क ८७९
२४.	१३५२	फाल्गुन सुदी १ बुधवार	गुणचन्द्रसूरि	वासुपूज्य की धातु-प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	आचार्य विजयधर्मसूरि, संपा., प्राचीन लेख-संग्रह लेखाङ्क ५० एवं नाहर, पूर्वोक्त, भाग-२ लेखाङ्क १०४१
२५.	१३५४	माघ वदि ५	धर्मदेवसूरि	पार्श्वनाथ की धातु-प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग -२, लेखाङ्क ९२६
२६.	१३५९(?)	वैशाख सुदि ६	रत्नसिंहसूरि		चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २८१
२७.	१३६१	तिथिविहीन	वर्धमानसूरि के शिष्य जयसेन उपाध्याय	स्तम्भलेख	लूणवसही, आबू	मुनि जयन्तविजय, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ३८४
२८	१३६९	"	आमदेव सूरि	महावीर की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २४४
२९.	१३६९	फाल्गुन सुदि ९ सोमवार	अजितदेवसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	प्राचीन जैनमंदिर लालबाग, मुंबई	मुनि कान्तिसागर, संपा.- जैन-धातु-प्रतिमा-लेख, लेखाङ्क २१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३०.	१३७१	आषाढ़ सुदि ३ गुरुवार	श्री उद...?	महावीर की धातु-प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर भावरी ग्राम, सिरोही	मुनि जयंतविजय, संपा.- अर्बुदाचल-प्रदक्षिणा-जैन-लेख-संदोह, लेखाङ्क ५२४
३१.	१३७३	वैशाख सुदि ७ सोमवार	पद्मदेवसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २५३
३२.	१३७८	वैशाख सुदि ६ बुधवार	रत्नसिंहसूरि	जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	"	वही, लेखाङ्क २७६
३३.	१३७८	ज्येष्ठ वादि ९ सोमवार	हेमप्रभसूरि के शिष्य रामचन्द्रसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	विमलवसही, आबू	मुनि जयंतविजय, संपा. अर्बुद-प्राचीन-जैन-लेख-संदोह, लेखाङ्क १३९ एवं मुनि जिन विजय, संपा.- प्राचीन जैनलेख-संग्रह भाग-२, लेखाङ्क २०२
३४.	१३८१	वैशाख सुदि १	धर्म्मदेवसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्ति, भाग-३ लेखाङ्क २२४९
३५.	१३८६	माघ वदि २ सोमवार	पद्मदेवसूरि के पट्टधर मानदेवसूरि	शांतिनाथ की धातुप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जानीशेरी, बडोदरा	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क १५०
३६.	१३८७	माघ वदि ९ शुक्रवार	पद्मदेवसूरि के पट्टधर मानदेवसूरि	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	स्तम्भन पार्श्वनाथ जिनालय, खारवाड़ा, खंभाग	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क १०४१
३७.	१३...?	फाल्गुन सुदि ८	मानदेवसूरि	"	चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ३८१
३८.	१३८८	मार्गशीर्ष सुदि ९ शनिवार	मदनसूरि के पट्टधर धर्मसिंहसूरि	महावीर की धातु की प्रतिमा का लेख	"	वही, लेखाङ्क ३२६
३९.	१३८८	वैशाख वदि २ सोमवार	हरिचन्द्रसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	जैन देरासर, कोलवड़ा	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-१, लेखाङ्क ६५९
४०.	१३८८	तिथिविहीन	आमदेवसूरि	"	चन्द्रप्रभदेरासर, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-३, लेखाङ्क २२५५
४० अ.	१३९१	चैत्रवदि ७ सोमवार	मानदेवसूरि	पद्मदेवसूरि के शिष्य भीमा के मूर्ति पर उत्कीर्ण लेख	शत्रुञ्जय	मधुसूदन ढाँकी और लक्ष्मण भोजक "शत्रुञ्जयगिरिनाकेटलाक अप्रकट प्रतिमा लेखो" सम्बोधि वर्ष ७, अंक १-४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४१.	१३९१	माघ सुदी ६ रविवार	हरिप्रभसूरि के शिष्य धर्मदेवसूरि	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय-बड़ोदरा	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त-भाग २, लेखाङ्क ४९
४२.	१३९२(३)	माघ वदि ११ शुक्रवार	पद्मदेवसूरि के शिष्य मानदेवसूरि	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	सीमंधरस्वामी का मंदिर खारवाडो, खंभात	वही, भाग-२ लेखाङ्क १०६८
४३.	१३९६	माघवदि २ सोमवार	मानदेवसूरि	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, देवसानो पाडो, अहमदाबाद	वही, भाग-१ लेखाङ्क १०९३
४४.	१३९७	माघ...	''	''	शांतिनाथ जिनालय छाणी, बड़ोदरा	वही, भाग-२ लेखाङ्क २५६
४५.	१४०५	वैशाख सुदि २	धर्मदेवसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, कनासानो पाडो, पाटण	वही, भाग-१ लेखाङ्क ३५७
४६.	१४०८	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	पद्मदेवसूरि के पट्टधर मानदेवसूरि	शांतिनाथ की धातु-प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय कुंभारपाडो, खंभात	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क ६५०
४७.	१४१७	ज्येष्ठ सुदि ९ गुरुवार	मानदेवसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, कनासानो पाडो, पाटण	वही, भाग-१ लेखाङ्क ३२४
४८.	१४२२	वैशाख सुदि १२ बुधवार	मुनिरत्नसूरि	शांतिनाथ की की प्रतिमा का लेख	चिंतामणि जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ४४९
४९.	१४२४	आषाढ़ सुदि ६ गुरुवार	धर्मदेवसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	''	वही, लेखाङ्क ४७०
५०.	१४३०	''	धर्मचन्द्रसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	संभवनाथ देरासर, पादरा	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क १४
५० अ.	१४३२	फाल्गुन सुदि २ शुक्रवार	गुणाकरसूरि के शिष्य रत्नप्रभसूरि की प्रतिमा के प्रतिष्ठापक उनके शिष्य गुणसमुद्रसूरि	गुरुप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	---	मधुसूदन ढाकी और लक्ष्मण भोजक- "शत्रुंजयगिरिना केटलाक अप्रकट प्रतिमा लेखो", सम्बोधि, जिल्द ७, अंक १-४, लेखाङ्क २७
५१	१४३५	माघ वदि १३ सोमवार	गुणदेवसूरि	पार्श्वनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	चिंतामणि जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ५१६
५२.	१४४६	वैशाख वदि.....	देवंचन्द्रसूरि के पट्टधर पार्श्वचन्द्रसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ मुख्य बावन जिनालय, मातर	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क ५२४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५३.	१४५१	ज्येष्ठ सुदि ४ रविवार	पासदेवसूरि	शांतिनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, ऊँझा	वही, भाग-१, लेखाङ्क १५५
५४.	१४५८	फाल्गुन वदि १ शुक्रवार	वीरचन्द्रसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिंतामणि जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ५८५
५५.	१४६६	वैशाख सुदि ३ सोमवार	धर्मदेवसूरि के पट्टधर पार्श्वचन्द्रसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	संभवनाथ जिनालय बोलपीपलो, खंभात	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क ११३३
५६.	१४६६	मार्गशीर्ष सुदि१० बुधवार	वीरचन्द्रसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ६२९
५७.	१४७४	फाल्गुन सुदी ९ सोमवार	पार्श्वचन्द्रसूरि सूरि के शिष्य मलयचन्द्रसूरि	"	धर्मनाथ देरासर, उपलोगभारो, अहमदाबाद	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखाङ्क १११३
५८.	१४७७	वैशाख सुदि ५	गणेशदेवसूरि	अनन्तनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ देरासर, छाणीं, बड़ोदरा	वही, भाग-२, लेखाङ्क २६७
५९.	१४७७	"	"	शांतिनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ जिनालय, बम्बावाली शेरी, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १००
६०.	(१४)७८	वैशाख सुदि ६ सोमवार	जयानन्दसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	अनुपूर्ति लेख, आबू	अर्बुद-प्राचीन-जैन-लेख-संदोह, लेखाङ्क ६६०
६१.	१४८४	वैशाख सुदि ११ रविवार	जिनदत्त (देव) सूरि	धातु की चौबीसी जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	कल्याण पार्श्वनाथ, देरासर, वीसनगर	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क ५३४
६२.	१४८७	मार्गशीर्ष सुदि ९ शनिवार	जिनदेवसूरि	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	मुनि सुव्रतनाथ जिनालय, खारवाडो, खंभात	वही, भाग-२, लेखाङ्क १०२५
६३.	१४९३	माघ सुदि ८ शुक्रवार	धनदेवसूरि	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, राजलदेसर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २३४७
६४.	१४९९	कार्तिक सुदि १५ गुरुवार	...तिलकसूरि	धर्मनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, बीकानेर	वही, लेखाङ्क १३४१
६५.	१४९९	माघ सुदि ६ सोमवार	मुनितिलकसूरि के पट्टधर गुणाकरसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, सेठों की हवेली के पास, उदयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क १९०१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६६.	१४९९	फाल्गुन वदि २ गुरुवार	जयानन्दसूरि, मुनितिलकसूरि गुणाकरसूरि	मुनिसुव्रत की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, सरदार शहर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २३८४
६७.	१५००	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	श्रीसूरि	शांतिनाथकी धातु चौबीसी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, कडुवामत की शेरी, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १३२
६८.	१५०१	माघ सुदि १० सोमवार	सुमतिसूरि, गुणाकरसूरि	चन्द्रप्रभ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	पंचायती मंदिर, जयपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ३४६
६९.	१५०१	फाल्गुन सुदि१३ शनिवार	मुनितिलकसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	"	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क ११४५
७०.	१५०३	मार्गशीर्ष वदि१०	"	संभवनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, रतलाम	विनयसागर, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ३७०
७१.	१५०३	मार्गशीर्ष सुदि ६	मलयचंद्रसूरि	सुमतिनाथ	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-३, लेखाङ्क २३२०
७२.	१५०४	माघ सुदि ५ रविवार	गुणाकसूरि के सानिध्य में मुनितिलकसूरि	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ९०४
७३.	१५०५	माघ वदि ७	मुनितिलकसूरि	मुनिसुव्रत की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय रतलाम	विनयसागर, पूर्वोक्त लेखाङ्क ३९७
७४.	१५०६	माघ वदि ३ गुरुवार	"	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा का लेख	चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ९००
७५.	१५०६	माघ सुदि ६	"	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	अस्पष्ट	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-१ लेखाङ्क २१३
७६.	१५०७	भाद्रपद सुदि१३ शुक्रवार	गुणदेवसूरि के संतानीय जिनदेवसूरि	सुविधिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	महावीरजिनालय, पायधुनी, मुंबई	मुनि कान्तिसागर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखाङ्क १०६
७७.	१५०७	माघ सुदि ५ गुरुवार	मुनि तिलकसूरि	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	बावन जिनालय, पेथापुर	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखाङ्क ७०४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७८.	१५०८	वैशाख सुदि ५ सोमवार	"	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, पटना (बिहार)	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखाङ्क २७७
७९.	१५०८	"	"	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	गौड़ी पार्श्वनाथ, जिनालय, पायधुनी, मुंबई	मुनि कान्तिसागर, पूर्वोक्त, भाग-१ लेखाङ्क १११
८०.	१५०८	मार्गशीर्ष वदि २ बुधवार	मुक्तिवि...सूरि	आदिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा कालेख	पंचायती मंदिर, जयपुर	विनयासगर, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ४३४
८१.	१५०८	मार्गशीर्ष सुदि ३ शुक्रवार	गुणदेवसूरि के संतानीय जिनदेवसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा के लेख	जैनमंदिर, बोटाड	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २३५
८२.	१५०९	माघ वदि ९ मंगलवार	वीरदेवसूरि के पट्टधर पासदेवसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर , चांदवाड, नासिक	मुनि कान्तिसागर, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ११५
८३.	१५११	ज्येष्ठ वदि ९ रविवार	गुणदेवसूरि के संतानीय जिनदेवसूरि के पट्टधर रत्नदेवसूरि	कुन्थुनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	नेमिनाथ जिनालय, सेठ की शेरी, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १७६
८४.	१५१२	वैशाख वदि ३ शुक्रवार	"	विमलनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, वीसनगर	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखाङ्क ५०४
८५.	१५१२	पौष वदि ५ शुक्रवार	मुनितिलकसूरि	चौमुख शांतिनाथ देरासर, अहमदाबाद		वही, भाग-१, लेखाङ्क ८९५
८६.	१५१३	वैशाख सुदि ५ शनिवार	गुणदेवसूरि के संतानीय रत्नदेवसूरि	शांतिनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	कल्याण पार्श्वनाथ देरासर, मामानी पोल, बड़ोदरा,	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-२ लेखाङ्क ३२
८७.	१५१३	वैशाख सुदि ५ शुक्रवार	मुनितिलकसूरि के पट्टधर गुणाकरसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, नागौर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क १२६४ एवं विनयासगर,पूर्वोक्त, लेखाङ्क ५०५
८८.	१५१३	माघ वदि ५	गुणाकर सूरि	"	चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ९७५
८९.	१५१३	माघ सुदि ६ रविवार	"	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ जिनालय, बड़ा बाजार, कलकत्ता	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखाङ्क १०१
९०.	१५१५	ज्येष्ठ सुदि ५	रामदेवसूरि	कुन्थुनाथ की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	वही, भाग-२, लेखाङ्क १०९०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९१.	१५१५	मार्गशीर्ष वदि ११	मुनितिलकसूरि के पट्टधर गुणाकरसूरि	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ९८५
९२.	१५१७	माघ वदि १२, गुरुवार	"	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	"	वही, लेखाङ्क १००३
९३.	१५१९	आषाढ़ वदि ९ शनिवार	"	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, अलवर	नाहर, पूर्वोक्ति, भाग-१, लेखाङ्क ९९२
९४.	१५१९	पौष वदि १३ मंगलवार	श्रीसूरि	संभवनाथकी धातु की प्रतिमा का लेख	संभवनाथ देरासर, झवेरीवाड़, अहमदाबाद	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखाङ्क ८६४
९५.	१५२३	वैशाख वदि ४ गुरुवार	गुणदेवसूरि के पट्टधर रत्नदेवसूरि	कुन्थुनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	शंखेश्वर पार्श्वनाथ देरासर, वीरमगाम	वही, भाग-१, लेखाङ्क १५०५
९६.	१५२४	वैशाख सुदि ३ सोमवार	....	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, शेखनो पाडो, अहमदाबाद	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखाङ्क १०१९
९७.	१५२४	वैशाख सुदि ६ गुरुवार	रामचन्द्रसूरि	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, भरुच	वही, भाग-२, लेखाङ्क ३१२
९८.	१५२५	ज्येष्ठ सुदि ५ बुधवार	गुणदेवसूरि के संतानीय जिनदेवसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	बालावसही, शत्रुञ्जय	मुनि कान्तिसागर, शत्रुञ्जयवैभव, लेखाङ्क १८
९९.	१५२७	ज्येष्ठ वदि ४ बुधवार	सोमकीर्तिसूरि ......?	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	वीरजिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १२२६
१००.	१५२७	आषाढ़ सुदि १३ रविवार	सोमकीर्तिसूरि के पट्टधर चारूचंद्रसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क १०९४
१०१.	१५२७	माघ सुदि ९ बुधवार	साधु कीर्तिसूरि चारुचन्द्रसूरि	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १०५४
१०२.	१५२८	चैत्र वदि १० गुरुवार	ज्ञानदेवसूरि	शांतिनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	गौड़ी पार्श्वनाथ जिनालय, गौड़ीजी की खड़की, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २५७
१०३.	१५२९	माघ वदि ६ रविवार	सोमकीर्तिसूरि	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	पंचायती जैन मंदिर, मिर्जापुर	नाहर, पूर्वोक्त भाग-१, लेखाङ्क ४३२
१०४.	१५३१	फाल्गुन सुदि ८ शनिवार	सोमकीर्तिसूरि के पट्टधर वीचन्द्रसूरि	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	वही, भाग-२, लेखाङ्क १०९६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०५	१५३४	वैशाख वदि १३ सोमवार	सोमकीर्तिसूरि के पट्टधर वारवेन्द्र (वीरचन्द्र) सूरि	"	पार्श्वनाथ जिनालय, भद्रावती	मुनि कान्तिसागर जैन-धातु-प्रतिमा-लेख, भाग-१, लेखाङ्क २२७
१०६.	१५३७	ज्येष्ठ वदि ४ मंगलवार	सोमकीर्तिसूरि के पट्टधर चारुचन्द्रसूरि	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	संभवनाथ देरासर झवेरीवाड़, अहमदाबाद	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखाङ्क ८४२
१०७.	१५३८	वैशाख वदि ५ बुधार	रत्नदेवसूरि के पट्टधर अमरदेवसूरि	चन्द्रप्रभ की धातु की प्रतिमा के लेख	आदिनाथ का बड़ा चैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २१३
१०८.	१५४०	मार्गशीर्ष सुदि ५	सोमकीर्तिसूरि के पट्टधर चारुचन्द्रसूरि	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा का लेख	विमलनाथ जिनालय कोचरों का चौक, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १५८३
१०९.	१५४२	वैशाख सुदि ९	सोमकीर्तिसूरि	आदिनाथ की पाषाण की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिना; हनुमानगढ़, बीकानेर	वही, लेखाङ्क २५३६
११०.	१५४३	वैशाख वदि १० शुक्रवार	सोमदेवसूरि	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, अहमदाबाद	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखाङ्क ९१९
१११.	१५४८	कार्तिक सुदि ११ गुरुवार	सोमदेवसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, पंजाबी धर्मशाला, पालिताना	शत्रुञ्जयवैभव लेखाङ्क २४३
११२.	१५४८	"	"	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	बड़ा मंदिर, पालिताना	वही, लेखाङ्क २४१, एवं नाहर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखाङ्क ६७५
११३.	१५५८	माघ सुदि ५ बुधवार	गुणदेवसूरि के संतानीय रत्नदेवसूरि	"	शांतिनाथ देरासर, ऊँझा	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखाङ्क २१३
११४.	१५५९	माघ सुदि १०	भुवनकीर्तिसूरि	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिना; बासा, सिरोही	अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह, लेखाङ्क ५५३
११५.	१५६६	वैशाख सुदि ७	"	अजितनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १३६८
११६.	१५७९	तिथिविहीन	वीरदेवसूरि के पट्टधर पासदेवसूरि	संभवनाथ की धातु का प्रतिमा का लेख	संभवनाथ देरासर, कड़ी	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखाङ्क ७३७
११७.	१५९१	वैशाख वदि २ सोमवार	वीरचन्द्रसूरि	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर देवसानो पाडो, अहमदाबाद,	वही, भाग-१, लेखाङ्क १०८२
११८.	१५९१	"	"	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिना, शेखनो पाडो, अहमदाबाद	वही, भाग-१, लेखाङ्क १००२
११९.	१५९१	वैशाख वदि ६ शुक्रवार	विजयदेवसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	कपडवज का मंदिर शत्रुञ्जय	शत्रुञ्जयवैभव, लेखाङ्क २८५

अभिलेखीय साक्ष्यों की पूर्वोक्त सूची से यद्यपि चैत्रगच्छीय अनेक मुनिजनों के नाम ज्ञात होते हैं, किन्तु उनमें से कुछ के पूर्वापर संबंध ही स्थापित हो पाते हैं, जो इस प्रकार हैं ---

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

?
|
जिनेश्वरसूरि
|
जिनदेवसूरि वि.सं. १३०३
?
|
यशोदेवसूरि
|
देवेन्द्रसूरि वि.सं. १३१२
धर्म देवसूरि वि.सं. १३१२-१३५४
?
|
पद्मचन्द्रसूरि
|
शालिभद्रसूरि
|
रविचंद्रसूरि — धर्मचंद्रसूरि
?
|
अजितसिंहसूरि
|
कनप्रभसूरि वि.सं १३२७
?
|
देवचन्द्रसूरि
|
अमरप्रभसूरि
|
अजितदेवसूरि वि.सं. १३३३-१३६९
?
|
देवप्रभसूरि
|
सोमचन्द्रसूरि वि.सं. १३३४

?
|
रत्नप्रभसूरि
|
पद्मप्रभसूरि वि.सं. १३२४-१३४...?
?
|
हेमप्रभसूरि
|
रामचन्द्रसूरि वि.सं. १३७८
?
|
पद्मदेवसूरि वि.सं. १३७३
|
मानदेवसूरि वि.सं. १३८६-१४१७
?
|
मदनसूरि
|
धर्मसिंहसूरि वि.सं. १३८८
?
|
देवचन्द्रसूरि
|
पार्श्वचन्द्रसूरि वि.सं. १४४६

?
|
हरिप्रभसूरि
|
धर्मदेवसूरि (वि.सं. १३९१-१४३०)
|
पार्श्वचन्द्रसूरि (विसं. १४४६-१४६६)
|
मलयचन्द्रसूरि (वि.सं. १४७४-१५०३)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

?
।
।
गुणदेवसूरि वि.सं. १५३५-१५७७
।
जिनदेवसूरि वि.सं. १५०७-१५०८
।
रत्नदेवसूरि वि.सं. १५११-१५५८
?
।
।
।
।
।
जयानन्दसूरि
।
मुनितिलकसूरि वि.सं. १५०१-१५०८
।
गुणाकरसूरि वि.सं. १४९९-१५१९
?
।
।
।
।
।
वीरदेवसूरि
।
पासदेव (पार्श्वदेव) सूरि वि.सं. १५०९
?
।
।
।
।
।
सोमकीर्तिसूरि
।

चारुचन्द्रसूरि वि.सं. १५२७-१५४०	वीरचन्द्रसूरि वि.सं. १५३१-१५३४

परंतु इन सबको मिलाकर भी चैत्रगच्छीय मुनिजनों की गुरु-शिष्य परंपरा की नामावली की अविच्छिन्न तालिका का पुर्नगठन कर पाना कठिन है।

साहित्यिक साक्ष्यों के अंतर्गत **सम्यक्त्वकौमुदी** (रचनाकाल वि.सं. १५०४/ई. सन् १४४८) और **भक्तामरस्तवव्याख्या** (रचनाकाल वि.सं. १५२४/ई. सन् १४६८) के कर्ता चैत्रगच्छीय गुणाकरसूरि का नाम आ चुका है, किन्तु वे किसके शिष्य थे, यह बात उक्त साक्ष्य से ज्ञात नहीं होती। अभिलेखीय साक्ष्यों में जयानन्दसूरि के पट्टधर मुनितिलकसूरि (वि.सं. १५०१-१५०८, प्रतिमालेख) के शिष्य गुणाकरसूरि (वि.सं. १४९९-१५१९, प्रतिमालेख) का उल्लेख मिलता है। अतः समयामयिकता के आधार पर मुनितिलकसूरि के **पट्टधर गुणाकरसूरि** को सम्यक्त्वकौमुदी आदि के कर्ता गुणाकरसूरि से अभिन्न माना जा सकता है।

?
।
।
।
।
।
जयानन्दसूरि
।
मुनितिलकसूरि (वि.सं. १५०१-१५०८)
प्रतिमा लेख

गुणाकरसूरि (वि.सं. १४९९-१५१९)
प्रतिमा लेख

वि.सं. से १५०४/ई. सन् १४४८ में
सम्यक्त्वकौमुदी और
वि.सं. १५२४ / ई. सन् १४६८ में
भक्तामरस्तवव्याख्या के रचनाकार

ठीक इसी प्रकार चैत्रगच्छीय सोमकीर्तिसूरि के शिष्य चारुचन्द्रसूरि (वि.सं. १५२७-१५४०, प्रतिमा लेख) और वि.सं. १५५४/ई. सन् १४९८ में प्रतिलिपि की गई भक्तामरस्तवव्याख्या की दाता प्रशस्ति में उल्लिखित चैत्रगच्छीय चारुचन्द्रसूरि एक ही व्यक्ति मालूम पड़ते हैं--

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

?
|
|
सोमकीर्तिसूरि (वि.सं. १५२७-१५४२, प्रतिमालेख)
|
|
चारुचन्द्रसूरि (वि.सं. १५२७-१५४०, प्रतिमालेख) वि.सं. १५५४/ई. सन् १४९८ में लिपिबद्ध की गई **भक्तामरस्तवव्याख्या** की दाताप्रशस्ति में उल्लिखित | वीरचन्द्रसूरि (वि.सं. १५३१-१५३४, प्रतिमा लेख)

चैत्रगच्छ की शाखायें-- जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है, साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों से चैत्रगच्छ की कई शाखाओं का पता चलता है। इनका अलग-अलग विवरण इस प्रकार है--

१. भर्तृपुरीय शाखा -- जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है, चैत्रगच्छ की इस शाखा का नामकरण भर्तृपुर (वर्तमान भटेवर, राजस्थान) नामक स्थान से हुआ प्रतीत होता है। इस शाखा से संबद्ध तीन लेख मिले हैं। प्रथम लेख वि.सं. १३०३ और द्वितीय लेख वि.सं. १३३४ का है। तृतीय लेख...१४ का है, अर्थात् इसके प्रथम दो अंक नष्ट हो गए हैं। श्रीपूरनचन्द नाहर और विजयधर्मसूरि ने वि.सं. १३०३/ई. सन् १२४७ के लेख की वाचना इस प्रकार दी है--[९]

'संवत् १३०३ वर्षे चैत्र वदि ४ सोमदिने श्रीचैत्रगच्छे श्रीभद्रेश्वरसंताने भर्तृपुरीयवत्स श्रे. भीम अर्जुन कडवट श्रे. चूडा पुत्र श्रे. वयजा धांधल पासड उवादिभि : कुटुंबसमेतैः... प्रतिमा कारिता। प्रति. श्रीजिनेश्वरसूरिशिष्यैः श्रीजिनदेवसूरिभिः।।'

तीर्थङ्कर की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख
प्रतिष्ठास्थान--करेड़ा पार्श्वनाथ जिनालय, करेड़ा

भर्तृपुरीय शाखा से संबद्ध द्वितीय लेख वि.सं. १३३८/ई. सन् १२८२ का है, जो शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण है। मुनि जयन्तविजय[१०]जी ने इस लेख की वाचना इस प्रकार दी है--

'संवत् १३३८ श्रीचैत्रगच्छे भर्तृपुरीय सा. खुनिया भा. होली पु. हरया केशववाण रावण बेल पु. नरसिंह खीमड हरिचंदेण निजपूर्वजपित्रोः श्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथबिंब का. श्रीवर्धमानसूरिभिः।।'

शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख
अनुपूर्तिलेख, आबू

इस शाखा से संबद्ध तृतीय लेख वि.सं. x x १४ का है। यह चित्तौड़ से प्राप्त हुआ है। त्रिपुटी महाराज[११] ने इनकी वाचना इस प्रकार की है--

'संवत् x x १४ वर्षे मार्गसुदि ३ श्रीचैत्रपुरीयगच्छे श्रीवुडागणि भतृपुर महादुर्ग श्री गुहिलपुत्रवि xx हार श्रीडवड़ादेव आदिजिन बाभांग दक्षिणाभिमुखद्वारगुफायां कलिं श्रुतदेवीनां चतु - x x x x लानां चतुर्णां विनयकानां पादुकाघटितसहसाकार सहिताश्रीदेवीचित्तोडरी मूर्ति x x x x श्रीभ्र (भ) र्तृगच्छीय महाप्रभावक श्रीआम्रदेवसूरिभिः x x x श्री सा. सामासु सा. हरपालेन श्रेयसे पुण्योपार्जना x व्यधीयते।'

यद्यपि इस लेख के प्रथम दो अंक नष्ट हो गए हैं, फिर भी लेख की भाषाशैली पर राजस्थानी भाषा के प्रभाव को देखते हुए इसे १६वीं शती के प्रारंभ अर्थात् १५१४ वि.सं. का माना जा सकता है।

भर्तृपुरीय शाखा से संबद्ध उक्त लेखों से यद्यपि कई मुनिजनों के नाम ज्ञात होते हैं, किन्तु उनके आधार पर इस शाखा के मुनिजनों की गुरु-परंपरा की कोई लंबी तालिका नहीं बन पाती है।

२. धारणपद्रीयशाखा- यद्यपि प्रतिमालेखों में 'धारणपद्रीय' नाम मिलता है, जो संभवतः **थारणपद्रीय** होना चाहिए। इस शाखा से संबद्ध २५ प्रतिमालेख प्राप्त हुए हैं, जो वि.सं. १४०० से वि.सं. १५८२ तक के हैं। इनका विवरण इस प्रकार है--

१.	१४००	तिथिनष्ट	राजदेवसूरि	शांतिनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ जिनालय, उपलोगभारो, अहमदाबाद	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखाङ्क १०१९
२.	१४५७	आषाढ सुदि ५ गुरुवार	पासदेवसूरि	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	संभवनाथ देरासर, झवेरीवाड़, अहमदाबाद	वही, भाग-१, लेखाङ्क ८६६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३.	१५०६	पौष वदि ६ सोमवार	विजयदेवसूरि	सुविधिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, पादरा	वही, भाग-२, लेखाङ्क ५
४.	१५०७	वैशाख सुदि ११ सोमवार	लक्ष्मीदेवसूरि	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिनालय, शेखनोपाडो, अहमदाबाद	वही, भाग-१, लेखाङ्क ९९८
५.	१५०७	"	"	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, मांडल	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २३०
६.	१५११	माघ सुदि ५	"	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ चैत्य, थराद	दौलतसिंह लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ६७
७.	१५१३	पौष वदि ५ रविवार	"	नमिनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	आदिनाथ देरासर, जामनगर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २८४
८.	१५१३	"	"	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	वीरचैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १७
९.	१५१३	पौष वदि ५ रविवार	लक्ष्मीदेव सूरि	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर चैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ३
१०.	१५१७	ज्येष्ठ सुदि ५ गुरुवार	"	कुन्थुनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	जैन देरासर, महुवा	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ३१५
११.	"	ज्येष्ठ सुदि	"	सुमतिनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, भानीपोल, राधनपुर	मुनिविशालविजय, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २१२
१२.	१५१७	पौष वदि ५ गुरुवार	"	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	मोतीसा की टूंक, शत्रुञ्जय	शत्रुञ्जयवैभव, लेखाङ्क १५१
१३.	१५१७	"	"	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, अहमदाबाद	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखाङ्क १०३१
१४.	१५१७	"	"	कुन्थुनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभजिना, सुल्तानपुरा, बड़ोदरा	वही, भाग-२, लेखाङ्क १९९
१५.	१५१७	माघ सुदि १० बुधवार	"	धर्मनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	नेमिनाथ जिना, सेठ की शेरी, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २०७
१६.	१५२२	तिथिविहीन	"	"	शांतिनाथ देरासर, जामनगर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ३६६
१७.	१५२४	चैत्र वदि ५	"	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ चैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १५५
१८.	१५२७	कार्ति वदि २ शनिवार	ज्ञानदेवसूरि	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा.	शांतिनाथ जिना, लिंवडीपाडा, पाटन	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-१,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१९.	१५२८	चैत्रवदि १ गुरुवार	ज्ञानदेवसूरि	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ देरासर, जामनगर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त,लेखाङ्क ४१४
२०.	१५२८	पौष वदि ३ सोमवार	"	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ चैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ३७
२१.	१५२८	तिथिविहीन	"	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ, जिनालय, जानीशेरी, बड़ोदरा,	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क १५३
२२.	१५३०	पौष... रविवार	लक्ष्मीदेवसूरि के पट्टधर ज्ञानदेवसूरि	शीतलनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	नेमीनाथ जिना, शेठ की शेरी, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २६८
२३.	१५३२	वैशाख वदि १० शुक्रवार	सोमदेवसूरि	नमिनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख		अगरचंद नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १८१८
२४.	१५५४	तिथिविहीन	"	"	चिंतामणि पार्श्वनाथ, देरासर, कड़ी,	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखाङ्क ७४१
२५.	१५८२	वैशाख सुदि १० शुक्रवार	विजयदेवसूरि	"	जैनमंदिर, लुआणा, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ३६७

अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर धारणपद्रीय (थारापद्रीय) शाखा के मुनिजनों की तालिका इस प्रकार बनती है--

?
राजदेवसूरि (वि.सं. १४००) १ प्रतिमा लेख
|
पासदेवसूरि (वि.सं. १४५७) १ प्रतिमा लेख
|

?
|
लक्ष्मीदेवसूरि (वि.सं. १५०७-१५२८) १४ प्रतिमालेख
|
ज्ञानदेवसूरि (वि.सं. १५२७-१५३०) ५ प्रतिमालेख

|
विजयदेवसूरि (वि.सं. १५०६) १ प्रतिमा लेख
|
सोमदेवसूरि (वि.सं. १५३२-१५५४) २ प्रतिमा लेख
|
विजयदेवसूरि (वि.सं. १५८२) १ प्रतिमालेख

३. चतुर्दशीपक्ष - चैत्रगच्छ की इस शाखा का केवल एक लेख मिला है, जो वि.सं. १५०६ का है। मुनि बुद्धिसागर[१२] ने इस लेख की वाचना इस प्रकार दी है--

"संवत् १५०६ वर्षे माघ सुदि १३ रवौ श्रीश्रीमालज्ञातीय सा. मेलाभा. करमादेसुतश्रीरंगभा. अमरी स्वेश्रेयोहेतवे श्रीश्रीचन्द्रप्रभनाथ-मुख्यचतुर्विंशतिपट्टः कारितः चतुर्दशीपक्षे चैत्रगच्छे श्रीगुणदेवसूरिसंताने श्रीजिनदेवसूरिभिः प्रतिष्ठितः शुभं भवतु।।"

प्रतिष्ठास्थान-- श्री अमीजरा पार्श्वनाथ जिनालय, जीरारवाडो, खंभात

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. चन्द्रसामीय शाखा – चैत्रगच्छ की इस शाखा से संबद्ध कई लेख मिले हैं, जो वि.सं. १५१० से वि.सं. १५४७ तक के हैं। इन सभी लेखों में मलयचन्द्रसूरि के पट्टधर लक्ष्मीसागरसूरि का प्रतिमाप्रतिष्ठापक के रूप में उल्लेख है। इनका विवरण इस प्रकार है--

१.	१५१०	माघ सुदी ५ शुक्रवार	मलयचन्द्रसूरि के पट्टधर लक्ष्मीसागरसूरि	चन्द्रप्रभ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	महावीर जिना, भोंयराशेरी, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १६३
२.	१५१८	पौष वदि१३ मंगलवार	"	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	कुंथुनाथ जिना, मांडवीपोल खंभात	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क ६४५
३.	१५२०	चैत्र वदि८ शुक्रवार	"	विमलनाथ की धात की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिना., भानीपोल राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २२६ विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ३४६
४.	१५२०	चैत्रवदि८ शुक्रवार	लक्ष्मीसागरसूरि	संभवनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिना., भौंयराशेरी राधनपुर	मुनिविशालसागर, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २२८
५.	१५२०	पौष वदि१३ मंगलवार	"	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, कोबा, अहमदाबाद	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखाङ्क ७६९
६.	१५२०	"	"	"	जगवल्लभ, पार्श्वनाथ देरासर, नीशापोल, अहमदाबाद	वही, भाग १; लेखाङ्क ११९६
७.	१५२१	माघ सुदि१ गुरुवार	"	"	चौमुखजी देरासर, ईडर	वही, भाग-१, लेखाङ्क १४५७
८.	१५२१	माघसुदि१३(?) गुरुवार	"	सुपार्श्वनाथ की धातु का प्रतिमा का लेख,	जगवल्लभ पार्श्वनाथ, देरासर, नीशापोल, अहमदाबाद,	वही, भाग-१, लेखाङ्क ११९५
९.	१५२२	कार्त्तिक सुदि २ गुरुवार	"	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, डभोई	वही, भाग-१, लेखाङ्क १५
१०.	१५२९	ज्येष्ठ वदि १ शुक्रवार	"	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, पायधुनी, मुंबई	मुनि कान्तिसागर पूर्वोक्त, लेखाङ्क २१०
११.	१५३२	ज्येष्ठ सुदि ५ सोमवार	"	शीतलनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिना, भानीपोल, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २८०
१२.	१५३४	कार्तिक सुदि१३ रविवार	"	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	सुपार्श्वनाथ का बड़ा पंचायती मंदिर, जयपुर	नाहर, पूर्वोक्त भाग-२, लेखाङ्क ११६३
१३.	१५३४	कार्तिक सुदि१३ रविवार	लक्ष्मीसागरसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	गौडीपार्श्वनाथ, जिनालय, पालिताना	मुनि कान्तिसागर, संपा. शत्रुञ्जयवैभव, लेखाङ्क २१६
१४.	१५३६	ज्येष्ठ सुदि ६ मंगलवार	"	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	पंचायती मंदिर, सराफा बाजार लश्कर, ग्वालियर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क १४१०
१५.	१५४७	माघ सुदि १३ रविवार	"	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चौमुखशांतिनाथ देरासर, अहमदाबाद	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखाङ्क ८८४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभिलेखीय साक्ष्यों द्वारा चैत्रगच्छीय मलयचन्द्रसूरि की गुरु परंपरा इस प्रकार निश्चित की जा चुकी है--

?

हरिप्रभसूरि

।

धर्मदेवसूरि (वि.सं. १३९१-१४३०)

।

पार्श्वचन्द्रसूरि (वि.सं. १४४६ - १४६६)

।

मलयचन्द्र सूरि (वि.सं. १४७४ - १५०३)

समसामयिकता के आधार पर पार्श्वचन्द्रसूरि के शिष्य मलयचन्द्रसूरि और चैत्रगच्छ की चन्द्रसामीय शाखा के लक्ष्मीसागरसूरि के गुरु मलयचन्द्रसूरि को एक ही व्यक्ति माना जा सकता है। लक्ष्मीसागरसूरि के पश्चात् इस शाखा का कोई उल्लेख नहीं मिलता, अतः यह कहा जा सकता है कि उसके बाद इस शाखा का अस्तित्व समाप्त हो गया। चैत्रगच्छ की यह शाखा चन्द्रसामीय क्यों कहलाई, इस संबंध में हमें कोई सूचना प्राप्त नहीं होती।

५. **सलषणपुराशाखा**--इस शाखा से संबद्ध केवल दो प्रतिमायें मिली हैं, जो वि.सं. १५३०/ई. सन् १४७४ में एक ही तिथि में एक ही मुहूर्त में और एक ही आचार्य द्वारा प्रतिष्ठापित हुई हैं। ये प्रतिष्ठापक आचार्य हैं चैत्रगच्छीय सलषणपुरा शाखा के आचार्य ज्ञानदेवसूरि। आचार्य विजयधर्मसूरि[१३] ने इन लेखों की वाचना इस प्रकार दी है--

"संवत् १५३० वर्षे पो (पौ)ष वदि ६ रवौ श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे. देपाल भा. हरपू सुत भूमाकेन भा. माल्हणदे हेदान (नि) मित्तं सुसुवसहितेन स्वये (श्रे) यस (से) श्रीवासुपूज्यबिंबं क. (का.) श्रीचे (चै)त्रगछे (च्छे) श्रीज्ञानदेवसूरिभिः प्रतिष्ठित (ष्ठितं) त...न्य. गाम...."

वासुपूज्य की धातुप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख
प्रतिष्ठास्थान-आदिनाथ जिनालय, जामनगर

"संवत १५३० वर्षे पौष वदि ६, रवौ श्रीश्रीमालज्ञा. श्रे. गेला भा. पूरी सु. रत्नाकेन भा. रूपिणि द्वि. भा. कीरूहितेन स्वपितृपूर्वजन्, (नि) मितं (त्तं) आत्मश्रेयार्थं श्रीवासुपूज्यबिंबं का. प्र. चैत्रगच्छ सलषणपुरा भ. श्रीज्ञानदेवसूरिभिः।।"

वासुपूज्य की धातुप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख
प्रतिष्ठास्थान--आदिनाथ जिनालय, जामनगर

चैत्रगच्छीय धारणपद्रीय (धारापद्रीय) शाखा के लक्ष्मीसागरसूरि के शिष्य ज्ञानदेवसूरि (वि.सं. १५२७-१५३०, प्रतिमालेख) का उल्लेख मिलता है। ये दोनों ज्ञानदेवसूर एक ही व्यक्ति है, या अलग-अलग, इस संबंध में निश्चयात्मक रूप से कुछ भी कह पाना कठिन है।

६-७ **कम्बोइया शाखा और अष्टापदशाखा**- राजगच्छपट्टावली[१४] (रचनाकार, अज्ञात, रचनाकाल वि.सं. की १६वीं शती का अंतिम चरण) में चैत्रगच्छ की इन दो शाखाओं का उल्लेख है, परंतु किन्हीं अन्य साक्ष्यों से उक्त शाखाओं के बारे में कोई जानकारी प्राप्त नहीं हो पाती।

८. **शार्दूलशाखा** - चैत्रगच्छ की इस शाखा का एकमात्र लेख वि.सं. १६८६/ई. सन् १६३० का है।[१५] इस लेख में राजगच्छ के एक अन्वय के रूप में चैत्रगच्छ की उक्त शाखा का उल्लेख है। इस शाखा के संबंध में अन्यत्र किसी भी प्रकार का कोई विवरण अनुपलब्ध है।

९. **देवशाखा** - जैसा कि पूर्व में हम देख चुके हैं, **दशवैकालिक** सूत्र की वि.सं. १७६८/ई. सन् १७१२ की प्रतिलिपित प्रशस्ति में चैत्रगच्छ की देवशाखा का उल्लेख है।[१६] इस शाखा के प्रवर्तक कौन थे, यह कब अस्तित्व में आयी इस बारे में कोई विवरण प्राप्त नहीं होता। चैत्रगच्छ तथा उसकी किसी शाखा का उल्लेख करने वाला अंतिम साक्ष्य होने से यह महत्त्वपूर्ण है।

ऐसा प्रतीत होता है कि भर्तृपुर (भटेवर) थारापद्र (थराद) और सलषणपुर में चैत्रगच्छ का उपाश्रय बन जाने पर वहाँ के चैत्रगच्छीय आचार्यों के साथ उक्त स्थानवाचक विशेषण जोड़ा जाने लगा होगा। इनमें से सलषणपुरा शाखा का अस्तित्व तो अल्पकाल में ही समाप्त हो गया, किन्तु भर्तृपुरीय और थारापद्रीय शाखा का लगभग २०० वर्षों तक अस्तित्व बना रहा।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता हैकि यह गच्छ ई. सन् की १२ वीं शती के प्रारंभ में अस्तित्व में था और १८ वीं शती के प्रथम चरण तक विद्यमान रहा। लगभग ६०० वर्षों के लंबे इतिहास में इस गच्छ के मुनिजनों (गुणाकरसूरि, चारुचन्द्रसूरि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आदि को छोड़कर) ने न तो स्वयं कोई ग्रन्थ लिखा है और न ही किन्हीं ग्रन्थों की प्रतिलिपि कराई, बल्कि प्रतिमाप्रतिष्ठापक के रूप में अपनी भूमिका निभाते रहे। धनेश्वरसूरि, भुवनचन्द्रसूरि, देवभद्रसूरि और जगच्चन्द्रसूरि को छोड़कर इस गच्छ में ऐसा कोई प्रभावक आचार्य भी नहीं हुआ, जो श्वेताम्बर श्रमणपरंपरा में विशिष्ट स्थान प्राप्त कर सकता। ई. सन् की १८ वीं शताब्दी के प्रथम चरण के बाद इस गच्छ से संबद्ध साक्ष्यों के अभाव से यह सुनिश्चित है कि इस समय के बाद इस गच्छ का स्वतंत्र अस्तित्व समाप्त हो गया और इस गच्छ के अनुयायी किन्हीं अन्य गच्छों में सम्मिलित हो गए होंगे।

सन्दर्भ

१. **अगरचन्द्र नाहटा**-'जैन-श्रमणों के गच्छों पर संक्षिप्त प्रकाश' **यतीन्द्रसूरि-अभिनंदन-ग्रन्थ** (आहोर, १९५८ ई.) पृष्ठ १४७ पर श्री नाहटा द्वारा उद्धृत मुनि बुद्धिसागर का मत।

मुनि कान्तिसागर, शत्रुञ्जय वैभव (कुशल संस्थान, जयपुर, १९९० ई.) पृष्ठ २६९

२. तपागच्छीय **देवेन्द्रसूरि**-कृत श्राद्धदिनकृत्यप्रकरण की प्रशस्ति Muni Punyavijay- Catalogue of Palm Leaf Manuscripts in the Shanti Nath Jain Bhandara, Canbay (g.o.s. no. 149 Part two, Baroda, 1966, A.D.) Pp 263-265.

तपागच्छीय क्षेमकीर्तिसूरिकृत बृहत्कल्पसूत्रवृत्ति (रचनाकाल वि.सं. १३२२/ ई. सन् १२५६) की प्रशस्ति।

C. D. Dalal - A. Desciptive Catalogue of Manuscripts in the jain Bhandars at pattan (G.O.S. No. LXXVI, Baroda, 1937 A.D.) Pp 354-356.

तपागच्छीय विभिन्न पट्टावलियों के सन्दर्भ में दृष्टव्य

त्रिपुटी महाराज, संपा., **पट्टावलीसमुच्चय**, भाग-१-२ (चारित्र-स्मारक, ग्रन्थमाला, ग्रन्थाङ्क, २२ एवं ४४, अहमदाबाद १९३३-१९५० ई.)

मुनि जिनविजय, संपा., **विविधगच्छीयपट्टावली - संग्रह** (सिंधी जैन-ग्रन्थमाला, ग्रन्थाङ्क ५३, बंबई १९६१ ई.)

मुनि कल्याणविजयगणि, संपा., श्री पट्टावलीपरागसंग्रह (कल्याणविजय शास्त्रसंग्रह-समिति, जालोर, ई. सन् १९६६)

३. A.P. Shah Catalogue of Sanskrit and Prakrit Mss Muni Shri Punyavijayajis Collection (L.D. Series No. 2, Ahamedabad, 1963 A.D.) Part I, P.P. 131, No. 2554

४. Ibid, Part I, P. 93, No. 1464

५. Ibid, Part I, P.83, No. 1018

६. द्रष्टव्य, पादटिप्पणी, क्रमांक २

७. त्रिपुटी महाराज, जैनतीर्थोनो इतिहास, (श्री चारित्र-स्मारक ग्रन्थमाला, अहमदाबाद, १९४९ ई.) पृष्ठ ३८५ और आगे.

८. G.C. Choudhary, Political History of Northern India (Sohanlal Jaindharma Pracharak Samiti, Amritsar, 1954 A.D.) P.P. 172-173.

९. पूरनचन्द्र नाहर, सम्पा. जैनलेखसंग्रह, भाग-२ (कलकत्ता १९२७ ई.), लेखाङ्क १९४२ तथा

विजयधर्मसूरि, संग्राहक-प्राचीनलेखसंग्रह (यशोविजय जैन ग्रंथमाला, भावनगर, १९२९ ई.) लेखाङ्क ३९.

१०. मुनि जयन्तविजय, संपा., अर्बुद प्राचीन जैन, लेख-संदोह (विजयधर्मसूरि-जैन-ग्रंथमाला, पुष्प ४०, छोटा सराफा, उज्जैन वि.सं. १९९४) लेखाङ्क ५३५.

११. त्रिपुटी महाराज-जैन तीर्थोनों इतिहास, पृष्ठ ३८५ और आगे

१२. मुनि बुद्धिसागरसूरि संपा., जैन धातुप्रतिमालेखसंग्रह भाग-२, (श्री अध्यात्मज्ञानप्रसारक-मंडल, पादरा, ई. सन् १९२४) लेखाङ्क ७५४

१३. आचार्य विजयधर्मसूरि-पूर्वोक्त, लेखाङ्क ४२८-४२९

१४. मुनि जिनविजय, पूर्वोक्त, पृष्ठ ५७-७१.

१५. मुनि जिनविजय-संपा., प्राचीन जैनलेखसंग्रह, भाग-२, (जैन आत्मानंद, सभा, भावनगर, १९२१ ई.) लेखाङ्क ३९८. पूरनचंद नाहर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखाङ्क ८३०.

१६. द्रष्टव्य, पादटिप्पणी, क्र. ५.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org